हम कष्ट क्यों उठाते हैं?

ठीक है, कुछ देर के लिए
मुझे आपका ध्यान लेने दें

और हम कोशिश करेंगे की सप्ताह के हमारे बड़े सवाल
का जवाब खोज पायें,

जो की मेरे खयाल से आज की पीढ़ी का
अत्याधिक लोकप्रीय सवाल है,

और मैं सोचता हूँ की यह
निश्चित रूप से इस पीढ़ी

के लिए संवेदनशील सवाल है। यह वाकई वह
सवाल है जो आपके भावनात्मक रसों मे हलचल

मचा देता है। यह सच में आपका
ध्यान आकर्षित करता है,

और आपके दिल के तारों को
खींच लेता है।

और यही सवाल हैः
हम कष्ट क्यों पाते हैं?

अब, इससे पहले की मैं आपको इस सवाल का
जवाब दूँ, मैंने सोचा कि मैं हम सब को याद दिलाऊं

उन ४ चीजों के बारे में जो हम
ने अब तक इस पहचान पाठ्यक्रम में सीखी हैं।

वे क्या हैं ? ४ चीज़ें। हमने अब तक सीखा की
परमेश्वर का अस्तित्व है।

हमने अब तक सीखा की परमेश्वर
इस संसार का ख्याल रखता है। हमने अब तक सीखा की

परमेश्वर आप और मुझ जेसे विद्रोहियों कि दुनिया
से सच में प्यार करता है।

और हमने अब तक सीखा की परमेश्वर
शक्ति शाली है। हमने ये सब केसे सीखा ?

ठीक है, बहुत आसान है, हमने ये सीखा
यीशु के व्यक्तित्व को देखते हुए

© Lee McMunn, 2011

और उसने जो कहा उसे सुनते हुए, और उसने जो किया
उसे देखते हुए। इस बारे में सोचें।

हमने यीशु की पहचान को देखा, और वे दावा करते हैं
की वे केवल एक साधारण पुरुष नही हैं,

परंतु परमेश्वर का अनंत पुत्र होने का दावा करतें हैं।

जेसे हम उसे देखतें हैं,
हम समझते हैं कि परमेश्वर है।

हम यह भी जानते हैं की परमेश्वर इस संसार से प्यार
करता है जिसमें हम रहते हैं, विद्रोहियों का संसार।

मेरे और आप जैसे विद्रोही। हम यह कैसे जानते हैं

हमने यीशु की पहचान को ही नही;
हमने उसके मिशन को देखा है।

वह बचाव का महान मिशन हमें
जगत के अंत मे उस महान न्याय से बचाने के लिए।

हम यह भी जानते हैं की परमेश्वर परवाह करता है

इस संसार में जो हो रहा है उसकी।
हम यह कैसे जानते हैं ?

ज़रा सोचिये आज रात हमने जो सीखा।
यीशु लाज़र कि कब्र के बाहर पहुँचता है...

बाइबल कि सबसे छोटी आयतः "यीशु रोए।"
वो रहा परमेश्वर का पुत्र इंसान कि सूरत में,

और वह रोता है। हम जानते हैं की परमेश्वर
इस संसार मे जो देखता है उसकी परवाह करता है।

और हम यह भी जानते हैं की परमेश्वर सर्वशक्तिमान है।
हम यह कैसे जानते हैं?

खैर, कई विभिन्न स्थानों पर, लेकिन अभी
आज रात के बारे में भी सोचें। लाज़र के बारे में सोचें,

और यीशु ने शारीरिक रूप से
उसे मुर्दों में से उठाया ।

उन चार प्रमुख बातों को याद रखना है जैसे हम कष्ट
के प्रश्न से मुठभेड़ करते हैं।

© Lee McMunn, 2011

क्योंकि जैसे हम कष्ट का सामना करें,
हम नहीं भूल सकते

कि यीशु कि पहचान और मिशन के सबूत
ने हमे कहाँ पहुंचा दिया हैं।

हम जानते हैं कि परमेश्वर है।
हम जानते हैं कि परमेश्वर परवाह करता है।

हम जानते हैं कि वह संसार से प्यार करता है,
और हम जानते हैं कि वह शक्तिशाली है।

जो हम जो कुछ भी कहें
पीड़ा के सवाल को,

आप यह नहीं कह सकते कि परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है,
वह परवाह नहीं करता,

वह प्यार नहीं करता और वह शक्तिशाली नहीं है,

क्योंकि यीशु के पहचान तथा मिशन ने
पहले से ही हमे इन बातों का विश्वास दिला दिया है।

तो, इसे दिमाग में रखते हुए, उस प्रश्न के बारे
में क्या: हम कष्ट क्यों पाते हैं?

खैर, दो बातें मैं आज रात को कहना चाहता हूँ।
पहली बात है कि कष्ट से

हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। लेकिन दूसरी बात,
है कि एक दिन कष्ट खत्म हो जाएगा

यीशु के अनुयायियों के लिए।

सबसे पहले, हमें कष्ट से आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए,
और इसे समझने का प्रयास करने के लिए,

मुझे फिर से किसी को चुनना होगा।
आज रात कौन है?

मैट, आज रात के उदाहरण के लिए
तुम चुने जाने वाले हो, ठीक है?

ठीक है, तो सिर्फ कल्पना करें
हम बाहर हैं।

© Lee McMunn, 2011

हम फिर से महासागर में हैं, तो हम दूसरे
जहाज़ पर हैं। बहुत रोमांचक है।

और यह अब तक बढ़ियां हैं। हमारा समय अब तक
मज़ेदार रहा है और हमें लगता है कि कप्तान बढ़िया है।

कप्तान का नाम मैट है, और हमें लगता है
वह बहुत बढ़िया काम कर रहा है अब तक।

लेकिन यात्रा के दौरान, कोई और...
डेव। सामने से डेव।

डेव देख रहा है, सुन रहा है,

और वह बस सोचता है कि नहीं कप्तान हमारे सर्वश्रेष्ठ
हितों के बारे में दिल से बिल्कुल नहीं सोच रहा है।

तो डेव क्या करता है, वह एक बड़ी सभा
बुलाता है, हम सभी बॉलरूम में पहुंचते हैं

और हम इसके बारे में बात-चीत करते हैं,
और निष्कर्ष निकालते हैं

कि मैट अच्छा, दयालु और प्यारा नहीं है,
वह हमारे सर्वश्रेष्ठ हितों के बारे मे नहीं सोचता,

और अब समय आ चुका है कि
हम उसके बारे में कुछ करें।

तो डेव क्या आयोजित करता है,
वह कुछ किशोर लड़कों को इकट्ठा करता है

और हम मैट को पकड़ते है, उसे बाँध देते है,
और हम उसे एक तरफ फेंक देते है।

और हम सोचते हैं, 'शानदार!
हम इस बुरे कप्तान से छुटकारा पा चुके हैं,

और चलो अपने नाव के
जीवन मे आगे बढ़ते है।'

और हम नाव पर थोड़ा समय जीते हैं,
और फिर कोई कहता है,

'क्या किसी को पता हैं
इसको कैसे चलाना है?' आह!

© Lee McMunn, 2011

खैर, यह तो कप्तान का काम है, और
अब वह कप्तान कहां हैं जब आपको उसकी आवश्यकता हैं?

वह आसपास नहीं है। अच्छा, इसके लिए कौन
जिम्मेदार है? इसके बारे में सोचें।

अगर हम उस जहाज़ पर रहते
और हमने कप्तान को पानी में फेंक दिया होता तो,

इस तरह जीने के दुष्परिणाम
निश्चित रूप से होंगे।

अच्छा, इसका परिणाम तो अवश्य ही होगा यदि हम
परमेश्वर की दुनिया में विद्रोहियों के रूप में रहते हैं।

और यही चित्र बाइबल हमें देता है
उस दुनिया कि जिसमें हम रहते हैं।

क्योंकि जिस तरह से हम रहते हैं और परमेश्वर और दूसरों से
व्यवहार करते हैं, तो कष्ट की उम्मीद तो होनी ही चाहिए।

अब, बाइबल का कहना है कि हम इतने जुड़े हुए हैं
एक दूसरे से और दुनिया के साथ...

कभी कभी यह बिल्कुल सच है
कि एक निश्चित तरीके से हमारा विद्रोह

हमें विशिष्ट कष्ट तक पहुंचाता है,
और कभी कभी हम उस कष्ट का कारण ढूंढ सकते है जो

हमारे कार्यों की वजह से आया है। लेकिन अक्सर
ऐसा नहीं होता, है ना?

अक्सर हम कष्ट का अनुभव करते हैं
किसी और के विद्रोह के कारण।

और कभी कभी हमारी वर्तमान पीढ़ी
के करण भी नहीं।

कभी कभी हमसे पहले कि पीढ़ी कि वजह से,
या उससे भी पहले कि पीढ़ी के कारण।

और कभी कभी इसका
सीधा जोड़ भी नहीं होता ।

© Lee McMunn, 2011

कभी कभी हम केवल इस दुनिया को प्रभावित करते है जिसमे
हम रहते है, और वह भी किसी बात का कारण बन जाता है।

बाइबिल का दृष्टिकोण हमारे
और इस ग्रह का है कि हम परस्पर जुड़े हुए है,

और वह कहती है कि हमें
कष्ट कि उम्मीद करनी चाहिए

क्योकिं जिस तरह से हम परमेश्वर की दुनिया में रहते हैं
और परमेश्वर से व्यवहार करते हैं।

अब, हमें यह मदद करता है
सही उम्मीदें रखने के लिए।

क्योंकि बाइबिल हमसे कभी भी वादा नहीं करती है

कि हम इस ग्रह पर ७५ वर्ष तक
कष्ट मुक्त जीवन बिताएंगे ।

परमेश्वर ये वादे कभी नहीं करता।
परमेश्वर हमारे प्रति बहुत दयालु और अनुग्रहकारी है,

और फिर भी हम कष्ट और विद्रोह से प्रभावित इस
दुनिया में रहते हैं।

हमें हमारी उम्मीदों को सही करना होगा।

इसका मतलब यह नहीं है कि हमें रूखा होना चाहिए
या हमें रोना नहीं चाहिए।

प्रभु यीशु आँसू बहाने कि
वैधता को दिखाते हैं

जब वे लाजर की कब्र के बाहर खड़े होते हैं।
हमें रोना चाहिए। यह बुरा है, यह गलत है,

लेकिन हमें सही
उम्मीदों को रखना चाहिए।

क्योंकि बाइबल का कहना यह है कि
यह दुनिया की एक विशेषता होगी

जब तक परमेश्वर इसे नहीं रोकता हैं।
और यह दूसरी महान बात हैं जानने के लिए।

© Lee McMunn, 2011

कि एक दिन कष्ट ख़त्म हो जाएगा
यीशु के अनुयायियों के लिए।

अब, यह जानना वास्तव में महत्वपूर्ण है
कि दुख खत्म नहीं होगा

उनके लिए जो अपने जीवन को
प्रभु यीशु मसीह के अधीन नहीं करते।

वह अनन्त कष्ट है जिसके
बारे मे यीशु बताते हैं।

यह एहसास होना ज़रूरी है
जब आप आंकते हैं

यीशु के पीछे चलने के मूल्य को।
यीशु के पीछे ना चलने का मूल्य क्या है?

खैर, यीशु अनंत काल के बारे में बताते हैं।
लेकिन वह वादा भी करते हैं

कि प्रभु यीशु के अनुयायियों के लिए,
एक दिन कष्ट का अंत हो जाएगा।

और वह क्या ही बढ़ियां बात होगी।
क्या आप कल्पना कर सकते हैं?

एक दिन जब कोई अंतिम विदाई नहीं होगी।
एक दिन जब कोई अंतिम संस्कार नहीं होगा।

एक दिन जब आपके और मेरे चेहरों
पर कभी भी कोई आँसू नहीं होगा।

क्योंकि जिस दुनिया मे हम रहते हैं,
वहाँ का कष्ट दूर कर दिया जाएगा

जब यीशु अंत में वापस आएगा।
यह परमेश्वर की योजना है, उस दिन,

जब वह उपना बेटा फिर भेजेगा इस
दुनिया में, दुनिया नए सिरे से बदल जाएगी,

और यह एक सुंदर और अद्भुत
जगह होगी रहने के लिए।

© Lee McMunn, 2011

अब, आप अपने आप मे सोच रहें होंगे,
'ठीक है, परमेश्वर इसे अभी खत्म क्यों नहीं करता?

आपको पता है, परमेश्वर दोबारा अपना बेटा क्यों नहीं भेजता
सभी कष्टों को रोकने के लिए?'

क्या आपको इस सवाल का जवाब पता है?
मुझे सच में नहीं पता।

क्योंकि परमेश्वर के इतने सारे विभिन्न योजना
और उद्देश्य हैं जो मेरा छोटा दिमाग

कभी समझ ही नहीं सकता। बहुत सारी
बातें है जो परमेश्वर ने प्रकट नहीं कि हैं

जैसे कि उसकी जटिल योजनाएं और
उद्देश्य। लेकिन आप के लिए मेरा सवाल यह है:

आप खुश हैं कि दुनिया एक मिनट में खत्म
नहीं होने जा रही है?

क्या आप चाहेंगे कि परमेश्वर इस दुनिया को
एक मिनट में खत्म कर दे?

मुझे लगता है कि सवाल यह है, क्या हम एक मिनट
में तैयार होंगे प्रभु यीशु का सामना करने के लिए?

लेकिन उसने उस दिन में देर कर दी है।
हाँ, यह होगा, लेकिन अभी

परमेश्वर चाहता है कि हम उस दिन के
लिए तैयार हों और उस दिन

की अपेक्षा मे जीएं।
तो आप कैसे तैयार होंगे

उस अद्भुत दिन के लिए
जब कष्ट खत्म हो जाएगा?

ठीक है, आप जैंसे भी है यीशु के पास आओ,
आप उसे अपना नियंत्रण दें,

और वह आपको बचाएगा
उस आने वाले अंतिम न्याय से।

और हम जो यीशु के विश्वासी हैं, हमें कैसे तैयार होना है?

© Lee McMunn, 2011

हमारी उम्मीदें भी सही हो जाती हैं। हम
इस दुनिया में रहने से प्रतिरक्षित नहीं हैं।

हम कष्ट से प्रतिरक्षित नहीं हैं। और फिर भी हमें यह विश्वास
करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि परमेश्वर भला

और शक्तिशाली है, और वह अपनी योजनाओं
और उद्देश्यों पर कार्य कर रहा है।

मेरे अनुसार एक बहुत उपयोगी उदाहरण है
इस तरह सोचना कि:

अगर वहाँ कोई स्वर्गीय नियंत्रण टावर नहीं होता तो,
वह एक डरावनी जगह हो सकती थी, है ना?

यदि वहाँ एक स्वर्गीय नियंत्रण टावर होता,
और आप सभी परदों को देखते,

लेकिन उन पर कुछ भी नहीं होता,
वह एक डरावनी संभावना होती।

लेकिन यह बाइबिल की तस्वीर नहीं है।
वहाँ एक स्वर्गीय नियंत्रण टावर है,

वहाँ परदे हैं, और किसी का नियंत्रण है।

और वहाँ परदों पर योजनाएं हैं।
लेकिन, बात यह है, हम उन्हें देख नहीं सकते।

हमारे दृष्टिकोण से हम सब विवरण नहीं देख सकते,
और फिर भी हमें भरोसा करने के लिए कहा गया है,

यीशु के पहचान और मिशन के आधार पर,

कि परमेश्वर भला है
और परमेश्वर अपनी योजनाओं पर काम कर रहा है।

और उस परमेश्वर के बारे में विशेष बात यह है
जिसने हमें बनाया: वह इतना शक्तिशाली है

कि वह बुराई का भी उपयोग कर सकता हैं
उसके अच्छे योजनाओं और उद्देश्यों के लिए।

यीशु की मृत्यु के बारे में सोचो। एक दुष्ट
कार्य, फिर भी दुष्ट पुरुषों द्वारा किए उस कार्य में,

© Lee McMunn, 2011

परमेश्वर ने अंतत भलाई को प्राप्त किया, जो है
आपके और मेरे जैसे विद्रोहियों का उद्धार।

वह इतना शक्तिशाली है कि वह बुराई का उपयोग
कर सकता हैं उसके अच्छे उद्देश्यों के लिए।

तो हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम परमेश्वर में विश्वास करें,
तैयारी करें और यीशु के पीछे चलें,

और लगातार जीते रहें और लगातार उस दिन
की लालसा करते रहें की जब कष्ट खत्म हो जाएगा।

और बाइबल हमें यही करने का प्रोत्साहन देती

रहेगी। वह दिन जहाँ कोई और अंतिम विदाई नहीं होगी,
कोई और अंतिम संस्कार नहीं होगा,

लेकिन एक दिन जब सदा सदा के लिए,
एक भौतिक नए विश्व में,

नए शारीरिक शरीरों के साथ, हम परमेश्वर की और यीशु के

सभी अनुयायियों की उपस्थिति में होंगे सदा सदा के लिये।

ठीक है, सोचने के लिए कुछ बातें है।
आप अपनी मेज़ पर जाएं

और इन बातों के बारे में सोचें और बातचीत करें?

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com